कोरोना से कराहता जीवन

अमृतांज इन्दीवर
मुजफ्फरपुर, बिहार

वैश्विक महामारी कोरोना (संक्रामक रोग) मानव जाति के लिए संकट बनकर आया है। यह शारीरिक रूप से ही नहीं अपितु मानसिक व आर्थिक स्तर पर भी असंतुलन पैदा कर रहा है। लेकिन इस रोग ने ऊंच-नीच, धर्म-जाति और पंथ-सम्प्रदाय से इतर यह साबित कर दिया है कि सबसे ऊंचा यदि कुछ है, तो वह मानवता है। अब देश को मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारे से अधिक अस्पताल, डॉक्टर,रिसर्च व वैज्ञानिक की आवश्यकता है। इस लॉक डाउन की वजह से लोगों में भय, कुंठा,संत्रास, हीनभावना जैसी नकारात्मक चीजें बहुत तेजी से बढ़ रही हैं। दूसरी ओर रोजी-रोजगार,कम-धंधा चैपट होने से भविष्य की चिंता भी बढती जा रही है।

मैं पेशे से एक शिक्षक व स्वतंत्र लेखक हूँ। परंतु इस लॉक डाउन ने निजी रूप से मेरे जीवन पर भी एक गहरा प्रभाव छोड़ा है। आम लोगों की तरह इसने मेरी भी आर्थिक स्थिति को बहुत प्रभावित किया है। इसकी वजह से स्कूल प्रबंधन ने मार्च से जुलाई तक का वेतन देने से इंकार कर दिया है, तो दूसरी तरफ नौकरी भी सुरक्षित नहीं है। ऐसे में सहज अनुमान लगाया तक सकता है कि साधारण व अशिक्षित मजदूरों की क्या स्थिति होगी? शहर की हालत और भी अधिक बदतर है। महामारी को फैलने से रोकने के लिए प्रशासन द्वारा उठाये जा रहे कदम सराहनीय है, इसलिए लोगों को घरों में रहने के लिए बाध्य किया जा रहा है, जो उचित है। लेकिन घर की चाहरदीवारी के अन्दर कारावास की स्थिति जैसी है। सब्जी,राशन, दूध और रोजमर्रा की वस्तुएं खरीददारी करने में भय तो है ही, साथ ही पैसे के अभाव ने हमें शहर से गांव आने के लिए मजबूर कर दिया है।

वहीं सोशल मीडिया पर फैल रही अफवाहें भी भयभीतकर रही हैं। अब गांव आने के बाद राहत की सांस ली है। खेत-खलिहान में लगे रहने से भय का स्तर कम हुआ है। हालांकि गांव आने के बाद भी मैं अपनी सामाजिक जिम्मेदारियों को निभाने का प्रयास कर रहा हूँ। रोज लोगों को इस बिमारी के खिलाफ जागरूक करने और उन्हें उचित जानकारियां उपलब्ध कराने का कार्य कर रहा हूँ। इससे स्वयं मेरे अंदर भी कोरोना का भय समाप्त हो रहा है। खुद सोशल डिस्टेंस तथा मास्क लगा कर लोगों से सोशल डिस्टेंस, साफ-सफाई, कोरोना के लक्षण, बचाव, शारीरिक व मानसिक तंदुरुस्ती पर चर्चा कर उन्हें जागरूक करता रहता हूँ।

बहरहाल, कोरोना से बचाव के लिए लोग ऊपर वाले से लोग प्रार्थना कर रहे है। लेकिन इस जानलेवा बीमारी के बाद लोगों के मन में रोजी-रोटी की चिंता सता रही है। गांव से लेकर शहर तक छोटे कारोबारी, किसान, मजदूर आदि के लिए चिंता का सबब है। जिसकी तरफ सिर्फ सरकार ही नहीं हम सब को गंभीरता से सोंचने की जरुरत है। फिलहाल कोरोना से कराहती जिंदगी के लिए मानव सेवा ही सबसे बड़ा मरहम है।